Shodh International: A Multidisciplinary International Journal (In Hindi)
Vol. 2, Issue 2 - 2017

अजमेर जिले के पर्यटन विकास पर पर्यावरणीय प्रभाव

कृष्णा मीणा*, डॉ. डी.सी. डुडी**

शोध सार (Abstract)

पर्यटन का पर्यावरण से गहरा सम्बन्ध है। पर्यावरण ही पर्यटन को गति एवं दिशा प्रदान करता है। सामान्यतः पर्यटक अनुकूल मौसम एवं वातावरण में ही भ्रमण को निकलता है। इसलिए भवनों की बेहतर रूपरेखा, पर्यावरण अनुकूल भवन सामग्री भौतिक योजना प्राकृतिक संस्थानों का संरक्षण आदि आवश्यक है।

पर्यटन की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण प्राकृतिक तथा सांस्कृतिक क्षेत्रों में पर्यावरण संरक्षण की अत्यधिक जरूरत हैं। पर्यटन की रुचि प्राकृतिक सौन्दर्य से भरपूर स्थलों का देखने में अधिक होती है। पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए इस पक्ष का ध्यान देना आवश्यक है कि पर्यटन स्थल को विशिष्ट चरित्र नष्ट नहीं होने दिया जाये। देखा जाये तो बढ़ता पर्यटन भी पर्यावरण के लिए खतरा है। अतः दोनों गतिविधियों के मध्य सामंजस्य बिठना अति आवश्यक है। पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए आवश्यक है कि स्वच्छ जल, स्वच्छता एवं सीवर आदि की बुनियादी सुविधाओं का विस्तार किया जाये। अतः पर्यटकों के निवास हेतु सैरगाह आदि का निर्माण करते समय यह कानूनी रूप से आवश्यक है कि प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण की पर्याप्त व्यवस्था की जाये।

विश्व पर्यावरण पर्यटन सम्मेलन

संयुक्त राष्ट्र संघ ने वर्ष 2002 को अन्तर्राष्ट्रीय पर्यावरण वर्ष के रूप मे घोषित किया। 19 व 20 मई, 2002 को कनाड़ा के क्यूबेक शहर में विश्व पर्यावरण पर्यटन सम्मेलन आयोजित हुआ था। इसका आयोजन संयुक्त राष्ट्र संघ पर्यावरण कार्यक्रम व विश्व पर्यटन संगठन के तत्वधान में हुआ। उक्त सम्मेलन का मुख्य उद्देश्य–

- सतत् विकास में पर्यावरण पर्यटन के संभावित योगदान की व्यापक समीक्षा शुरू करना।
- पर्यावरण पर्यटन की सतत् योजना विकास हेतु प्रबंधन तथा विपणन में प्राप्त हुए अनुभवों तथा उत्कृष्ट कार्य तकनीक का आदान प्रदान करना।
- पर्यावरण पर्यटन परियोजनाओं व व्यवसाय में स्थानीय समुदायों तथा देशज लोगों की भागीदारी के बारे में प्राप्त अनुभवों व सीखों की समीक्षा करना।

पर्यावरण संरक्षण हेतु निम्न तथ्यों को महत्वपूर्ण माना गया–

*शोधार्थी, भूगोल विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर।
**विभागाध्यक्ष, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, सांभर लेक, जिला–जयपुर।
Correspondence E-mail Id: editor@eurekajournals.com

© Eureka Journals 2017. All Rights Reserved.

- प्रतिकूल प्रभावों को नियंत्रित करने हेतु पर्यटन के प्रभावों पर निगरानी के लिए एक पद्धति विकसित करनी होगी।
- समुदाय आधारित पर्यावरण पर्यटन उद्यमों सहित स्थानीय समुदायों के साथ संयुक्त पर्यावरण पर्यटन नीतियाँ विकसित करने के लिए भागीदारों को प्रशिक्षित करना होगा।
- पर्यावरण पर्यटन की योजना और प्रबन्ध मे समुदाय की भागीदारी बढ़ाने के लिए दिशा–निर्देशों को प्रोत्साहित करना होगा।
- राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर पर्यावरण पर्यटन नीति लागू करने के लिए गैर–सरकारी संगठनों की सहायता करना और उन्हें इसके लिए प्रोत्साहित करना होगा।
- पर्यावरण पर्यटन आयोजन, व्यवहार्यता, मूल्यांकन और जहाँ उचित हो वहाँ व्यापार आयोजन के बारे में दिशा–निर्देश तैयार करने होंगे।
- आदर्श पर्यावरण पर्यटन कार्यक्रम एवं यात्रा वृतांत विकसित करने में सहायता करनी होगी ताकि स्थल संरक्षण साझीदारों और स्थानीय समुदायों को लाभ हो सके।
- विनष्ट न होने वाली सभी वस्तुओं जैसे खाली बोतले, टिन, प्लास्टिक बैग इत्यादि को अपने साथ वापस ले जाना चाहिये। इन्हें नियत कूड़ा पात्रों में ही फैंकना चाहिये।
- पवित्र स्थलों, मंदिरों व स्थानीय संस्कृति की पवित्रता का ध्यान रखना चाहिये।
- ध्वनि प्रदूषण फैलाने से बचना चाहिये।

क्या नहीं करना चाहिए–

- स्थानीय, वनस्पति या जतु विविधता को काटकर बीज रूप मे या जड़ सहित लाने का प्रयास नहीं करना चाहिए।
- झीलों या नदियों में नहाते समय या कपड़े धोने के लिए डिटर्जेंट जैसे प्रदूषकों का प्रयोग नहीं करना चाहिए।
- सांस्कृतिक विरासत के स्थानों को आधुनिक बुनियादी सुविधाओं वाले केन्द्रों से जोड़ा जाए। सम्पन्न विरासत और सभ्यता की गरिमा को पर्यटकों को परिचित कराने के लिए इन केन्द्रों पर अभिलेखन केन्द्र और व्याख्या केन्द्र, हस्तकला वाणिज्य केन्द्र और अन्य ऐसी ही सुविधाएँ निर्मित की जाएगी।

अजमेर जिले में प्राकृतिक संसाधनों पर पर्यटन का प्रभाव

पर्यटको के लिए आवास स्थल बनाने के लिए स्थान की आवश्यकता होती है चूंकि स्थान तो पहले से सीमित होते हैं, इस कारण उन स्थानों पर जहाँ कोई रहता तो नहीं वरन् वहाँ हरियाली है, अर्थात् पेड़–पौधे लगे होते हैं, उन्हें हटाकर उनके स्थान पर बड़ी–बड़ी होटलें विश्राम गृह आदि बनाये जाते हैं। अत यदि इसी प्रकार पर्यटन का विकास होता रहा तो धीरे धीरे आवास स्थल बनाने की होड़ में पर्यावरण का विनाश भी होता रहेगा। इसका अप्रत्यक्ष रूप से प्रभाव पशु–पक्षियों, जीव–जन्तुओं तथा मनुष्यों पर भी पड रहा है। पर्यटन हमारे वातावरण पर अच्छा प्रभाव तो डालते ही है, साथ ही कुछ कुप्रभाव भी वातावरण पर पड़ते हैं। जैसे–जल प्रदूषण, वायु–प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण, पेड़ों की कटाई आदि। प्रदूषण के बारे मे विचार किया जाए तो हम यह कह सकते हैं कि वातावरण में यदि सभी वस्तुएँ जैसे गैस, पानी, पेड़–पौधे, जीव–जन्तु आदि सभी एक संतुलित मात्रा में रहे तो वातावरण शुद्ध रहेगा, किन्तु एक भी अवयव की मात्रा मे अनियमितता होने पर वातावरण अशुद्ध हो जायेगा यही 'प्रदूषण' कहलाता है।

अजमेर में बहुत सारे होटल शहर के बीच में स्थित है। इनमे जो यात्री ठहरते है उनका व्यर्थ पदार्थ तथा अन्य सामग्री आदि पानी में

© Eureka Journals 2017. All Rights Reserved.

बहा दिये जाते है। जिससे जल प्रदूषण होता है। वायु प्रदूषण भी फैले हुए कूड़े–कचरे से फैलता है। इसी प्रकार कुछ स्थान ऐसे भी हैं, जो बडे शांत हैं। पर्यटकों का शोरगुल ध्वनि प्रदूषण बढ़ाता है।

इस प्रकार यह कहा जा सकता है। पर्यटन का अजमेर शहर के वातावरण पर अच्छा बुरा प्रभाव पड़ता है। पर्यटन से जहाँ राष्ट्रीय एकता, सद्भावना, पारस्परिक प्रेम जैसी भावनाओं का विकास होता है, वहीं पर्यटन से हमारे वातावरण को खतरा भी है। इसलिए नागरिकों को सजग रहना चाहिए कि शहर के आस–पास के स्थानों से काटे जा रहे वृक्षों की कटाई को रोके। पर्यटकों को आवास सुविधा दिलाने के लिए ऐसे स्थानो का चयन किया जाये जो कि बंजर हो जहाँ खेती नहीं की जा सकती या पेड़ पौधे नही लगाये जा सकते हैं। इससे पर्यावरण सुरक्षित रहेगा तथा अतिथियों को आवास सुविधाएँ भी उपलब्ध हो पायेंगी।

समय के साथ पर्यटन पर पर्यावरण प्रभाव

बढ़ती हुई पर्यटन वृद्धि से पर्यावरण की भारी क्षति हो रही है। कचरा, कूड़े–करकट एव धूल मिट्टी के ढेर जमा हो रहे हैं। इसी प्रकार पोलिथिन व प्लास्टिक समानों के ढेर न केवल स्थान की सुन्दरता को बिगाड़ते हैं, बल्कि पानी की निकासी व अन्य प्रकार की सफाई की गतिविधियों में अवरोध उत्पन्न करके पर्यावरण के लिए अनगिनत समस्याएँ उत्पन्न कर देते हैं। पहाडी क्षेत्र के साथ–साथ आजकल तो अन्य स्थान जहाँ ऐतिहासिक स्मारक पर्यटन के आकर्षण हैं, वहाँ भी अवैध कब्जा करने वालों में तबाही मचा रखी है। कई स्थल तो ऐसे हैं जो बाजारी भीड़ में छिप गये है व कुछ तो बाजार के ही अंग बन गये हैं। जो बाजार से दूर हैं, वहाँ लोगों ने अपने रहने के स्थान बना लिए हैं। इसके अतिरिक्त कल कारखानो के धुओ ने प्राचीन ईमारतो के रग को ही धुंधला नहीं कर दिया है, बल्कि आस–पास के वातावरण को भी प्रदूषित कर दिया हैं। अतः अब आवश्यक हो गया है कि पर्यावरण को सुरक्षित रखने के लिए सख्त कानून बनाये जाये तथा उनका कड़ाई से पालन कराया जाये।

अति तो यह है कि सितम्बर से दिसम्बर का मौसम सूखे और सूने पर्यटन स्थल, होटलों के खाली पड़े कमरे और मक्खियाँ मारते शोरूम और टैक्सी वाले लगता है अजमेर के पर्यटन उद्योग के लिए जिस अनिष्ट की आशंका थी वह घड़ी आ पहुँची है।

पर्यावरण संरक्षण से टिकाऊ पर्यटन एवं टिकाऊ विकास दोनों को प्रोत्साहित किया जा सकता है। अजमेर में बहुसंख्य सुरम्य प्राकृतिक स्थल हैं। यहाँ पर अनेक प्रकार के वन, बियाबान, चरागाह, घाटियाँ एव नदीतट प्राकृतिक पर्यटन बढाने के लिए अत्यन्त महत्त्वपूर्ण पर्यटन स्थल हैं। इन्हें विकसित कर व संरक्षण देकर पर्यावरण पर्यटन के विकास पर लगाया जा सकता है। इससे प्राकृतिक स्थलो के प्रेमी पर्यटन इन स्थलों पर जायेंगे एवं वहाँ पर कुछ दिन रहना पसंद करेंगे। यहाँ पर मानसिक एवं आत्मिक शांति मिलती है। जिसे प्राप्त करने वह बार–बर आते हैं। प्राकृतिक स्थलों पर ऐसी पिकनिक हट होती हैं कि जहाँ पर पर्यटक लंबे समय तक निवास करने पर भी उसे प्रदूषित नहीं करते हैं।

यदि ऐसा होता भी है तो ऐसे प्रयास किए जाते हैं कि प्रदूषण कम एवं प्रकृति संरक्षण का क्षेत्र अधिक हो। अधिक पर्यटकों के जाने से अवश्य वह क्षेत्र प्रभावित होते हैं और वहाँ की संस्कृति एवं मर्यादा अवश्य प्रदूषित होती है।

इसमें पर्यटकों की भीड़ जब इन नैसर्गिक सौन्दर्य के कोमल स्थलो पर उमड़ती है तब वहाँ पर आवास एवं भोजन की समस्या

© Eureka Journals 2017. All Rights Reserved.

उत्पन्न होती है। ऐसे अवसर पर वहाँ धरती पर शिविर स्थापित कर आवास की समस्या हल की जाती है। खुले क्षेत्र में ही भोजन बनाया जाता है जिसमें आस–पास के वनों से जलावन (ईंधन) लाया जाता हैं जिससे भारी प्रदूषण फैलता है। आस–पास के साफ सुथरे स्थल, कूड़ा करकट एवं वर्ज्य पदार्थों से प्रदूषित हो जाते हैं। इससे आस–पास की आबादी एवं उनकी सांस्कृतिक परम्परा भी बहुत हद तक प्रभावित होती है।

अतः प्राकृतिक संरक्षण टिकाऊ पर्यटन एवं टिकाऊ विकास दोनों साथ–साथ जुड़े हुए हैं। अतः पर्यटकों के आवागमन से यहाँ का प्राकृतिक सौन्दर्य कम से कम प्रभावित हो, ऐसी व्यवस्था एक सुनियोजित संरक्षण कार्यों एवं प्रबन्धन के अन्तर्गत की जा सकती है। इसमें घरेलू एवं अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटकों को एक सुव्यवस्थित तरीके से बड़ी से बड़ी संख्या में आकर्षित कर पर्यटन विकास एवं स्थानीय रोजगार की संभावनाओं को ध्यान में रखकर विकास किया जा सकता है। पर्यावरण संरक्षण एवं प्रदूषण से मुक्ति के आसान, सुलभ एवं लोकप्रिय तरीके खोजे जाने चाहिए। अतः पर्यावरण विकास से पर्यटन विकास और पर्यटन के विकास देश का विकास अधिक संभव है।

निष्कर्ष

इस प्रकार अत्यधिक पर्यटकों के आवागमन से, अनपेक्षित भीड़भाड़ से बढ़ती आबादी के जमघट से हमारी स्वच्छ पानी की नम भूमियाँ, झरने तालाब एवं पेयजल स्रोत, बड़ी तेजी के साथ प्रदूषित होते जा रहे हैं।

यदि यही स्थिति रही तो एक दिन विश्व के सारे पेयजल स्रोत, स्वच्छ जल की झीलें नदियाँ एवं नमभूमियाँ बहुत बूरी तरह से प्रदूषित होकर दुनिया से लोप हो जायेगी। जिनके संरक्षण की तत्काल आवश्यकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

[1]. incredibleindia.com.
[2]. www.districtindia.com.
[3]. www.ajmertourism.nic.in.
[4]. www.tourism.gov.in.
[5]. www.pib.nic.in.
[6]. www.archive.india.gov.in.
[7]. सक्सेना, एच.एम.; पर्यावरण एवं प्रदूषण, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर।
[8]. चौहान, तेजसिंह; राजस्थान का भूगोल, कुलदीप पब्लिकेशन, अजमेर
[9]. राजस्थान दर्शन; पर्यटन कला एवं संस्कृति विभाग, राजस्थान, जयपुर।

© Eureka Journals 2017. All Rights Reserved.